15

परिचय (यहूदा)

यहूदा की पत्री में 2 पतरस से चौंकाने वाली समानताएं हैं। वास्तव में यहूदा और 2 पतरस 2 में कई बार मिलते-जुलते शब्दों और अभिव्यक्तियों का इस्तेमाल हुआ है। इसलिए पतरस के दूसरे पत्र के साथ यहूदा के लघु पत्र का अध्ययन करना उपयुक्त है। यहूदा तथा 2 पतरस का विषय वस्तु और रूचियां 1 पतरस के विषय वस्तु और रुचियों से काफ़ी भिन्न हैं, परन्तु वे मसीह की देह की बेहतरी और सजीवता के लिए उतनी ही महत्वपूर्ण है।

लेखक

यहूदा ने अपने आपको ''यीशु मसीह का दास और याकूब का भाई'' बताया (आयत 1)। यदि हम उस याकूब को पहचान सकें जिसकी उसने बात की, तो वहां तक हमें यहूदा की पहचान हो जाएगी। आरम्भिक कलीसिया में इस नाम का सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति निस्संदेह प्रभु का भाई याकूब था (प्रेरितों 15:13; 21:18; गलातियों 1:19)। यह वही व्यक्ति था जिसने याकूब की पत्री लिखी और जिसे जी उठने के बाद प्रभु ने दर्शन दिया (1 कुरिन्थियों 15:7)। यहूदा ने और विस्तार से नहीं बताया कि याकूब कौन था, स्पष्टतया क्योंकि इसकी आवश्यकता नहीं थी। आरम्भिक कलीसिया में इतने बड़े कद का याकूब केवल एक ही था कि उसका नाम लेना ही काफ़ी था। जब्दी का पुत्र याकूब एक मात्र और सम्भावित व्यक्ति है, जिसे यहूदा के अपने पत्री लिखने के कई साल पहले मार डाला गया था (प्रेरितों 12:1, 2)।

हमें बताया गया है कि याकूब, यूसुफ (या योसेस), शमौन, (या यहूदा या यूदास) नामक प्रभु के भाई थे (मत्ती 13:55; मरकुस 6:3)। यीशु के जीवनकाल में, भाइयों ने उसे मसीह नहीं माना था और वे ठट्ठा करने वालों के साथ मिल गए थे (यूहन्ना 7:1-5)। सम्भवतया विश्वास करने वाला सबसे पहला याकूब ही था और उसने दूसरों को समझाया हो सकता है। पौलुस के 1 कुरिन्थियों लिखने तक प्रभु के भाई प्रसिद्ध प्रचारक और शिक्षक बन गए थे (1 कुरिन्थियों 9:5)। न तो याकूब और न ही यहूदा ने अपने आपको अपने पत्रों की आरम्भिक आयतों में प्रभु के भाई के रूप में परिचय कराना आवश्यक समझा। उन्होंने मसीह के सेवक होने से बढ़कर सम्मान की मांग नहीं की।

लिखे जाने का अवसर

यहूदा में झूठे शिक्षकों का विवरण 2 पतरस 2 वाले विवरण जैसा ही है। परिस्थितियां इतनी मिलती जुलती थीं कि स्पष्ट रूप से यहूदा ने पतरस के ही कई शब्दों का इस्तेमाल किया। जहां पतरस ने भविष्यकाल में चेतावनी दी, ''... तुम में भी झूठे उपदेशक होंगे'' (2 पतरस 2:1), वहां यहूदा ने भूतकाल में संकेत दिया कि झूठे शिक्षक कलीसियाओं में घुस आए थे। यहूदा ने अपने मित्रों के नाम उनके सामान्य उद्धार के विषय में और ऊंचा उठाने वाला पत्र लिखने की

उम्मीद की, परन्तु कलीसिया पर झूठे शिक्षकों द्वारा लाए जाने वाली धमकी के कारण उसे उन्हें विश्वास के लिए यत्न करने का आग्रह करने के लिए लिखना पड़ा (यहूदा 3)।

यहूदा के पत्र से कई प्रश्न खड़े होते हैं जिनका हम उत्तर नहीं दे सकते। और अन्यों का हम केवल अनुमान लगा सकते हैं। हम इतना जानते हैं कि यहूदा और पतरस की बातें एक दूसरे की बात पर ही ज़ोर देती हैं। किसी बेहतर जानकारी के अभाव में, हम मान लेते हैं कि यहूदा ने अपना पत्र उसी सामान्य क्षेत्र की कलीसियाओं के नाम लिखा जिन्हें पतरस ने लिखा। हो सकता है कि यहूदा का कुछ मण्डलियों पर प्रभाव अधिक हो और पतरस का दूसरी मण्डलियों पर। यहूदा ने यह स्पष्ट करने के लिए कि वह और प्रेरित पतरस अपनी झूठी शिक्षाओं से कलीसियाओं में गड़बड़ करने वाले झूठे शिक्षकों के विरुद्ध एकझुट हैं पतरस के शब्दों का इस्तेमाल जानबूझकर किया। यहूदा ने सम्भवतया अपना पत्र 2 पतरस के लिखे जाने के कुछ साल बाद लिखा, जिसका अर्थ यह होगा कि यह 60 ईस्वी के अन्त में या 70 के आरम्भ में लिखा गया। पत्र में ऐसा कोई संकेत नहीं है कि लेखक यह पत्र लिखने के समय कहां था या अपने पाठकों के साथ उसका सम्बन्ध कैसा था।

यहूदा की एक रूपरेखा

अभिवादन (आयतें 1, 2)

I. परमेश्वर का न्याय उन पर जो उसका इनकार करते हैं (आयतें 3-7)

II. परमेश्वर का क्रोध दुष्टों के घमण्ड पर (आयतें 8-16)

III. परमेश्वर का प्रेम अपने लोगों की ओर (आयतें 17-23)

स्तूतिगान (आयतें 24, 25)